Degree 1
History P-I

गोर वंश का परिचय

गोर गजनी और हिरात के बीच एक छोटा सा पहाड़ी राज्य था। पाँच विशाल पर्वतमालाओं से विभाजित गोर प्रदेश के अन्तर्गत आधुनिक अफगानिस्तान का मध्य भाग, ऊपरी हरीरूद, फराहरूद, रूदे गोर, खवाशरूद और बीच के पर्वतों की घाटियों थे आच्छादित था। गोर प्रदेश के निवासी मूलतः पूर्वी ईरान से आने वे और वे मुख्यतः खेती करते थे। शहतूत, अखरोट, खुबानी तथा अंगूर मुख्य फसल थे। अश्वपालन एवं दासों का व्यापार भी उनका मुख्य पेशा था। लोहा प्रचुर मात्रा में मिलने के कारण युद्ध सम्बन्धी उपकरणों का उत्पादन होता था।

गोर में शंसबानी वंश का राज्य था। इस वंश का संस्थापक शुहाक नामक एक नायक था। शुहाक के सम्बन्ध में अनेक कल्पित कहानियों का विवरण मिलता है। ईरानी परम्परा के अनुसार - शुहाक एक घृणित व्यक्ति था। एक दूसरी प्रथा के अनुसार - शुहाक एक देवता था। शुहाक के वंश के शंसब ने खलीफा अली के शासन में इस्लाम धर्म स्वीकार किया था। गोर पर खलीफाओं के शासनकाल में कई बार आक्रमण हुए। सम्भवतः गोर प्रदेश में पहले बौद्ध धर्म का प्रभाव था और मुसलमान सन्तों के प्रयासों से गोर में इस्लाम धर्म का प्रचार सम्भव हो सका।

P.T.O

Scanned with CamScanner

गोर को करद राज्य बनाने का श्रेय सर्वप्रथम महमूद गजनवी को प्राप्त है। उसने 1009 ई० में गोर के शासक मुहम्मद-बिन-सुरी को पराजित कर गजनवी की अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया था। महमूद गजनवी के मृत्यु के बाद मध्य-एशिया की राजनीति में एक नया मोड़ आया। गजनवी साम्राज्य धीरे-धीरे विघटित होने लगा और सल्जूक तुर्कों ने गजनवी साम्राज्य पर आक्रमण कर निशापुर पर अधिकार कर लिया। सल्जूक तुर्कों का प्रभाव उत्तरोत्तर मध्य एशिया में बढ़ने लगा और वे अफगानिस्तान से लेकर भूमध्य सागर तक के क्षेत्रों पर प्रभुसत्ता कायम करने में सफल हो गए। सल्जूक तुर्कों का उदय से गजनवी वंश की शक्ति क्षीण हो गई और बदली हुई परिस्थिति में गोर वंश को अपना प्रभाव बढ़ाने का अवसर मिल गया। गोर वंश ~~गजनवी~~ गजनी के साम्राज्य पर हावी हो गया और ख्वारिज्म वंश के शासक ने सुल्जूक तुर्कों के क्षेत्र पर अपना प्रभाव बढ़ा लिया। करा-खिताई तुर्क चीन चले गये और ख्वारिज्म वंश वालों ने गजनी, ईरान और अफगानिस्तान पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार सल्जूक तुर्कों की शक्ति के उदय और अवसान के साथ गोर वंश का उत्थान हुआ।